International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैदिक एवं लौकिक साहित्य का संगीत से संबंध

लोकेश शर्मा
असिसटेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय, से–14, गुरूग्राम

साहित्य काव्य का अर्थ एवं परिभाषा

साहित्य क्या है? साहित्यकारों एवं साहित्य–मनीषियों ने अपने–अपने ढंग से विचार किया है। साहित्य अपने व्युत्पत्ति मूलक रूप में सहित+यत से बना है और इसकी दो व्याख्याएं प्रचलित हैं। प्रथम, 'साहितस्यभावः साहित्यम्' तथा 'हितेन सह सहितम् तस्य, भावः साहित्यम्। इन व्याख्याओं के अनुसार साहित्य के दो अर्थ स्पष्ट होते हैं– साथ–साथ और हित सहित अर्थात् साहित्य में शब्द और अर्थ साथ–साथ रहते हैं और इससे हित सम्पादन होता है। राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'काव्यमीमांसा' के अंतर्गत शब्द और अर्थ के सहभाव को साहित्य कहा है–

"शब्दार्थयोः यथावत्सहभावेन विद्या साहित्य विद्या।

साहित्य विषयक इन व्युत्पत्तिमूलक अर्थों से स्पष्ट है कि साहित्यकार शब्द और अर्थ के संयोग से साहित्य की रचना करता है। अपने व्यापक अर्थ में वह वांगमय का भी बोध कराता है।"[1]

"शब्द और अर्थ का उचित अथवा सम्यक् योग साहित्य कहलाता है– सहितयोः शब्दार्थयो भावः साहित्यं। साहित्य का अर्थ है शब्द और अर्थ का यथावत सह भाव अर्थात साथ होना। इस प्रकार सार्थक शब्दमात्र का नाम साहित्य है। जहां शब्द और अर्थ, विचार और भाव का परम्परानुकूलता के साथ सहभाव हो, वही साहित्य है। साहित्य की यह परिभाषा अत्यंत व्यापक है और इससे स्पष्ट है कि समस्त ग्रंथ समूह साहित्य ह।"[2]

साहित्य की महत्ता

"विश्व का प्राचीनतम साहित्य (वेद) ही हमें 'पाठ्य' तथा 'गेय'–रूप में मिलता है।"[3]

भर्तृहरि ने बहुत समय पहले साहित्य की महत्ता को व्यक्त कर दिया है–

"साहित्य–संगीत कला विहीनः।

साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः।।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अर्थात् साहित्य संगीत कला से विहीन मानव बिना पूंछ वाले पशु के समान है।"[4] साहित्य की बहुत सी परिभाषाएं की गई हैं, परन्तु अधिकांशतः विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि शब्द और अर्थ ही साहित्य का आधार हैं। साहित्य शब्द मनुष्य के भावों और विचारों की समष्टि हैं। अच्छे साहित्य में सत्यम्–शिवम्–सुंदरम्, का सामंजस्य होना आवश्यक है क्योंकि सत्य काव्य का साध्य, शिवम् काव्य का हित और सौन्दर्य उसकी साधना है।

वैदिक साहित्य

सबसे प्राचीन ग्रंथ के रूप में ऋग्वेद स्वयं में वृहद् साहित्य है। इसका काव्य–सोन्दर्य भी अद्भुत, रोचक और हृदयहारी है। वेद–मन्त्र अर्थात ऋचाएं काव्यमयता के गुणों से परिपूर्ण हैं। उदाहरण के तौर पर साहित्य को दर्शाती ऋचा उल्लेखित है–

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानै वृक्षं परिषस्वजाते।

त्योरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नयो अभिचाकशीति।।

दो समान आयु वाले मित्र पक्षी (ईश्वर और जीव) एक ही वृक्ष (शरीर) का आलिङ्गन कर रहे हैं। उसमें से एक (जीव) स्वादिष्ट पीपल के फल (सांसारिक सुख भोग) का भक्षण करता है दूसरा ईश्वर (उपभोग) किये हुए फल को केवल देखता रहता है। ऋग्वेद के साहित्य में ईश्वर जीव और प्रकृति के स्वरूप को रूपक अलंकार द्वारा समझने के लिए उपरोक्त ऋचा में सुंदर आलंकारिक वर्णन है।"[5]

प्रकृति की अद्भुत छटाओं, प्रकृति में विद्यमान जल, वनस्पति जगत, पृथ्वी, अंतरिक्ष आदि से संबंधित ऋचाओं का उल्लेख भी वेदों में संग्रहित है। उदाहरणार्थ :–

"द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः।

सर्वं शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।"[6]

यजुर्वेद में वर्णित इस ऋचा के साहित्य में प्रकृति के जीवनाधार तत्त्वों की स्तुति का वर्णन है। निर्मल जल जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, शुद्ध वायु जिसके बिना प्राण संचलित नहीं हो सकते, पवित्र औषधियां, वनस्पति जगत, पृथ्वी, अंतरिक्ष सभी निर्मल होने चाहिए तभी जीवन उन्नत हो सकता है। यदि ये तत्त्व प्रदूषित हो जाएं तो जीवन संकटों से घिर जाएगा। उपरोक्त ऋचा में इन तत्त्वों क निर्मल होने की स्तुति की गई है। ये ऋचाएं मानव को प्रकृति के महत्त्व के बारे में बताती हैं व दिए गये संदेशों के माध्यम से मानव को प्रकृति के समीप लाती हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लौकिक साहित्य

"रामायणस्य साहित्यिकं महत्वम्– रामायणकालिकसमाजे धर्मः प्राणरूप आसीत्। आदिकाव्यं वाल्मीकीय रामायणं सांस्कृत वांगमस्य अनुपमं रत्नं विद्यते। काव्यक्षेत्रे विलक्षणमुतस्य साहित्यिक–महत्वम् वर्तते।"[7]

विद्वानों का मानना है कि लौकिक ग्रंथ के रूप में आदि कवि वाल्मीकीय कृत रामायण उच्च कोटि का साहित्य है। यह ग्रंथ भी संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इस साहित्य में संगीत विषेयक समुन्नति तथा प्रसार के सर्वत्र दर्शन होते हैं।

आदिप्रभृति गेयं स्याद्र पार्थिवम्।

पिता हि सर्वभूतानां राजा भवति धर्मतः।।

'आरम्भ से ही काव्य का गान करना चाहिये। तुम लोग एसा कोई बर्ताव न करना, जिससे राजा का अपमान हो; क्योंकि राजा धर्म की दृष्टि सम्पूर्ण प्राणियों का पिता होता है।'

"शब्द संगीत का आदिम रूप ही रामायण का अनुष्टप् छन्द है, रामायण में संगीत का उल्लेख किष्किन्धा काण्ड में इस प्रकार आया है।

षट्पादतन्त्रीमधुराविधानं प्लंवगमोदीरितकण्ठतालम्।

आविष्कृतं मेघमृदंगनादैर्वनेषु संगीतमिव प्रवृत्तम।।

क्वचित्प्रनृतैः क्वचिदुन्नदद्भि क्वचिच्च वृक्षाग्रनिषण्णकायैः।

ब्यालम्बबर्हाभरणैर्मयूरैर्वनेषु संगीतमिव प्रवृत्तम।।

श्री रामचन्द्र किष्किन्धावन का वर्णन करते हुए लक्ष्मण जी से कहते हैं–हे लक्ष्मण, देखो भ्रमरों का गुंजार वीणा का मधुर स्वर जैसा है। मेढ़क मानो अपने कण्ठ से ताल के बोल बोल रहे हैं। मेघ का गर्जन मृदंग के नाद जैसा सुनाई दे रहा है। लगता है वन में संगीत चल रहा है। और भी देखो ये मयूर संगीत का कैसा दृश्य उपस्थित कर रहे हैं। इन लम्बी–लम्बी चोटियों वाले मयूरों में से कुछ तो नाच रहे हैं, कुछ गा रहे हैं, कुछ वृक्षों के अग्रभाग में बैठे हुए इस नृत्य और गान का आनन्द ले रहे हैं। लगता है वन में संगीत चल रहा है।"[8] रामायण में गान के साथ वाद्यों की संगत का वर्णन भी अनेक स्थानों पर मिलता है। निम्न श्लोक इसकी पुष्टि करता है।

तद युवां हृष्टमनसौ श्वः प्रभाते समाहितौ।

गायतं मधुरं गेयं तन्त्रीलयसमन्वितम्।।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अतएव तुम दोनों भाई प्रसन्न और एकाग्रचित होकर कल सबेरे से ही वीणा के लय पर मधुर स्वर से रामायण–गान आरम्भ कर दो।

"तुलसीदास जी ने अपने साहित्य में संगीत के लिए उत्तरदायी तत्त्वों का कम इस प्रकार निरूपित किया है–

वर्णानां अर्थसंघानां रसानां छन्द सामपि

मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ।

अर्थ यह है कि साम यानी संगीत की पूर्णता वर्ण, अर्थ, रस, छन्द के समुच्चय एवं समुचित प्रस्तुतिकरण से 'साम' के स्तर तक पहुंचती है। साम स्तर की विशेषता यह है कि वह संगीत को मंगलकारी बना देता है तथा साम के कर्ता को, नायक को वन्दनीय बना देता है। कालीदास अपनी जागृत लेखनी के माध्यम से वाक् और अर्थसम्पृक्ति द्वारा पाठक के मन और चित्त के तल पर जो नाद पैदा करते हैं वह अन्तः करण को भरपूर अनुकूल करन वाला है। इसी ने बाल्मीकि को कवि बनाया और इसी ने कालिदास को उनके ग्रंथ कुमारसंभवम् में योग तक पहुंचाया।"[9]

महाकवि कालीदास को संस्कृत साहित्य के आकाश का दैदिप्यमान सूर्य माना जाता है। उन्हें काव्यस्रष्टा, कविकुलगुरू, सफल महाकाव्यकाल, सर्वोत्कृष्ट नाटककार, सर्वश्रेष्ठ गीतिकाव्य का प्रणेता माना जाता है।

अपने साहित्य के शब्दचयन में उन्हें नीरक्षीर विवेकी की संज्ञा दी गई है। कालिदास में सर्वतोमुखी प्रतिभा विद्यमान थी। उनके रचित मेघदूतम व अभिज्ञानशाकुन्तलम् ग्रंथों में अद्वितीय साहित्य रचना देखने को मिलती है। उपमा के क्षेत्र में भी कोई उनका सानी नहीं है। "उपमा कालिदासस्य" यह उक्ति आज तक विद्वानों के हृदय में समाई हुई है। इसीलिए साहित्य के क्षेत्र में कालिदास सभी कवियों में अद्वितीय माने गए हैं।

इसी कारण समीक्षकों का कहना है–"पुरा कविनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।

अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव।।"[10]

महाकवि कालिदास के स्तोत्रों में उच्च कोटि का साहित्य भरा पड़ा है। इसका दर्शन गंगा स्तोत्र में स्पष्ट देखने को मिलता है। उदाहरणार्थ–

"नमस्तेऽतु गंगे त्वदंगप्रसंगाद्भुजंगास्तुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः।

अनंगारिरंगाः ससंगाः शिवांगा भुजंगाधिपांगीकृतांगा भवन्ति।।"[11]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"साहित्य के गेय रूप का अगर हम मूल देखें तो सर्वप्रथम वैदिक काल ही हमारे मस्तिष्क में आता है। सामगान के रूप में ऋक् की ऋचाएं गेय रूप पाती हैं।

उन ऋचाओं को गेय रूप प्रदान करने के लिए जिन अक्षरों व शब्दों का प्रयोग छंद पूर्ति के लिए किया गया। उन 'स्तोभाक्षरों' को एक स्थूल पहचान यहीं से मिली, यदि ऐसा कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। अनेक शास्त्रावचन इसके प्रमाण हैं।"[12]

भारतीय साहित्य में महाभारत काल का एक विशिष्ट स्थान रहा है। इस विशालकाय महाकाव्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति–सभ्यता–साहित्य का सर्वांगीण चित्रण उपलब्ध होता है। इस महाकाव्य में भी संगीत के दृष्टान्त यत्र–तत्र देखने को मिलते हैं।

"महाभारत कालीन साहित्य में साम गान का अर्थात् वेद गान यथेष्ट रूप में होता था। यज्ञ के समय साम गान के अतिरिक्त स्तुति, स्तोम, गाथा इत्यादि का भी गान होता था। इस काल में यज्ञोत्सव हो या सामाजिक उत्सव सभी में साहित्य एवं संगीत का स्थान प्रमुख था।"[13] उदाहरणार्थ–

"सामानि गायन् याम्यानि, सामानि सामगास्तस्य गायन्ति यमसादने"[14]

यह उक्ति सामवेद की ऋचा के गान को स्पष्टतः दर्शाती है।

"यद्यपि महाभारत संगीत का ग्रंथ नहीं है फिर भी इस विशाल ग्रंथ में यत्र–तत्र सांगीतिक साहित्य की चर्चा हुई है। उन में श्रीविष्णुसहस्रनाम स्तोत्र, श्रीकृष्णद्वादशनाम स्तोत्र आदि का साहित्य प्रमुखतः सामने आता है। निम्न स्तोत्र का साहित्य इस बात को दर्शाता है–

श्रीकृष्णद्वादशनामस्तोत्रम्–

किं ते नामसहस्त्रेण विज्ञातेन तवार्जुन।

तानि नामानि विज्ञाय नरः पापैः प्रमुच्यते।।

प्रथमं तु हरिं विन्द्याद्द्वितीयं केशवं तथा।

तृतीयं पदमनाभं च चतुर्थं वामनं स्मरेत्।।"[15]

इस गेय स्तोत्र के साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के बारह नामों की स्तुति का उल्लेख दर्शाया गया है। श्रीमद्भगवतगीता जैसे महान ग्रंथ का सूत्रपात भी इसी काल में हुआ है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संगीत व साहित्य का संबंध

"शब्दों के माध्यम से हृदयगत भावों की कलात्मक, रसात्मक और लयात्मक अभिव्यक्ति ही काव्य का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार स्वर के माध्यम से वही कलात्मक, रसात्मक और लयात्मक अभिव्यक्ति संगीत का रूप धारण कर लेती है। दोनों का आधार एक है, अभिव्यक्ति के माध्यम भिन्न हैं। परन्तु दोनों के समन्वित रूप अधिक आनन्ददायक बन जाते हैं। साहित्य एवं स्वर के समुचित संगम से ही गायक श्रोताओं के अन्तर को छू सकता है तथा कवि रसानुभूति करा सकता है। यद्यपि काव्य की रस–सरिता में अवगाहन का अपना अलग आनन्द है और स्वर–लहरी में निमज्जन करने में एक अलग शान्ति मिलती है, परन्तु काव्य और संगीत की समन्वित गंग–धारा का स्नान अलौकिक व अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति कराता है। इसीलिए काव्य और संगीत का अन्यान्याश्रित संबंध सदा–सदा से है और रहेगा।

कवि राजशेखर के अनुसार–

आगोपालकमायोषिदास्यामेतस्य लेह्यता। इत्यं कविः पठन्काव्यं वाग्देव्या अतिवल्लभः।।

अर्थात्– जो कवि काव्य को इस प्रकार पढ़ सके (अथवा गान कर सके) कि रस का आस्वासन गोपालों (ग्वालों) और अनपढ़ स्त्रियों तक को हो जाये, वह वाग्देवी (सरस्वती) का अत्यन्त प्रिय होता है।"[16] संगीत वस्तुतः कठिन से कठिन साहित्य को भी आसान ढंग से जनमानस के हृदय में प्रवेश करवा देता है। ये संगीत की अनुपम विशेषता है।

"पं० ओंकार नाथ ठाकुर ने रणजीत राम स्मारक सुवर्णचन्द्रक के अवसर पर अपनी संगीतसंस्कृति पर भाषण देते हुए ठाकुर जी ने संगीत तथा साहित्य के अविच्छिन्न संबंध की पुष्टि का महत्वपूर्ण शब्दों में समर्थन भी किया है–मैं तो साहित्य को सदैव ही संगीत का सहोदर मानता आया हूं। कारण–'संगीतमय साहित्य सरस्वत्याकुच्द्वयम्। साहित्य जिसका जीवन है और संगीत उसके जीवन का निष्कर्ष है। ऐसी वीणा–धारिणी भगवती माता के युगल पयोधरों का ग्रहण करके ही जिसके जीवन की गहन नींव रखी गई है, ऐसे साहित्यकार तथा संगीतकार के लिए भाई के अतिरिक्त अन्य कौन सा संबंध योग्य गिना जाये। अपनी दो आंखें जो कि साथ ही देखती हैं, हंसती–रोती हैं, बिल्कुल ऐसा ही संबंध साहित्य और संगीत का है।"[17]

इस प्रकार काव्य और संगीत का संबंध शाश्वत है–अध्यात्मवाद की दृष्टि से भी और विकासवाद की दृष्टि से वेद को अपौरूषेय माना जाता है, इस प्रकार वैदिक ऋचाओं को गाने के नियम भी अपौरूषेय हुए। ऋग्वेद के अधिकांश मंत्र जब सस्वर गाये जाते हैं, तब उन्हें सामवेद कहा जाता है। ऋग्वेद के पाठ में मन्त्रोच्चारण सस्वर किया जाता है। इस सृष्टि से वैदिक साहित्य के साथ संगीत का शाश्वत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संबंध सिद्ध होता है। "वैदिक काल से लेकर आज तक के साहित्य के आधार पर हम यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि शब्द रमणीय अर्थ की व्यंजना करने में तभी समर्थ होता है, जब उसके साथ संगीत का भी योग हो। संगीत और काव्य का घनिष्ठ संबंध स्वतः सिद्ध है। साहित्य के योग से संगीत की रचना में अर्थ का गांभीर्य आता है और संगीत के योग से काव्य में लालित्य की वृद्धि होती है।"[18]

"संगीत और साहित्य का संबंध मस्तिष्क से न होकर हृदय से है। साहित्यकार हृदय की उमड़ती, मचलती हुई भावनाओं को ही काव्य का रूप दिया करता है। कविता या अन्य किसी प्रकार का उच्च साहित्य केवल मस्तिष्क से ही नहीं समझा जाता, उसका स्थान तो हृदय में है और वहीं से उमड़ कर वह काव्य का रूप धारण कर लेता है। यही बात हमें संगीत में भी मिलती है। मानव–हृदय की कोमलतम भावनाओं को जब स्वर और ताल के ढांचे में ढाल दिया जाता है, तब उसकी संज्ञा संगीत होती है।"[19] ऋचा एवं स्तोत्र सबसे प्राचीन वैदिक साहित्य के रूप में विद्यमान है। इस साहित्य ने किसी न किसी रूप में सभी को अपनी और आकर्षित किया है।

"साहित्य एवं काव्य को विद्वानों ने एक–दूसरे का समानार्थी माना है। जैसा कि विदित है कि साहित्य का अभिप्राय 'सहित भाव' से है जिसके अंतगत शब्द का अर्थ समाहित हो वही साहित्य अथवा काव्य है।"[20]

"साहित्य किसी देश की राष्ट्रीय संस्कृति तथा जातीय भावनाओं का प्रतीक होता है। संस्कृत साहित्य भारत का राष्ट्रीय गौरव है। हमारा संस्कृत साहित्य हमारी संस्कृति का निर्मल दर्पण है। संस्कृत साहित्य में हमें अपन गौरवमय अतीत की झांकी देखने को मिलती है। साहित्य परा तथा अपरा विद्याओं का महनीय कोष है। प्राचीनता की दृष्टि से यह अद्वितीय है। व्यापकता की दृष्टि से यह सर्वांगीण है। इसमें पुरूषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का सांगोपांग विवेचन किया गया है।"[21]

महान संगीतज्ञों के विचार

साहित्य एवं संगीत के संबंध में महान दार्शनिकों के अनेक विचार देखने को मिलते हैं, उनमें से कुछ महान विचारकों के विचार यहां उदधृत हैं–

"पं० ओंकारनाथ ठाकुर ने काव्य और संगीत का संबंध अटूट बताया है। इनके शब्दों में–"अकारादि व्यंजनों के साथ 'अ' आदि स्वरों का जो संबंध है, देह के साथ आत्मा का जो संबंध है, वही संगीत का काव्य से है।"[22]

"डॉ० सुभद्रा चौधरी के शब्दों में–काव्य के आधार, भाषा में स्वर यानि आनंदांश है तो, लेकिन गौण है। इसलिए उसके द्वारा आनंद की वैसी अनुभूति नहीं होती जैसी संगीत के द्वारा होती है। उसमें जब स्वर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का यथोचित योग होता है तो वह असीम आनंद देता है। आनंदांश की प्रधानता के कारण गांधर्व अर्थात् संगीत को सभी कलाओं में श्रेष्ठ माना गया और सच्चिदानंद रूप ब्रह्मा के समक्षक रखा गया।"[23]

"पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के शब्दों में–काव्य और संगीत में उतना ही अंतर है, जितना सगुण और निर्गुण में है। काव्य सगुण है और संगीत निर्गुण। अंतर अति सूक्ष्म है। काव्य की विशिष्टता उसके अंतर में निहित स्वर है और स्वर का अलंकार शब्द है। संगीत नाद प्रधान साहित्य है और साहित्य शब्द प्रधान संगीत है। दोनों का पार्थक्य हानि की सम्भावनाओं से भरा हुआ है।"[24]

"ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य है।

–महावीर प्रसाद द्विवेदी

मानव ने नाना प्रकार के अस्वादन में ही अपनी उपलब्धि करनी चाही है, बाधाहीन लीला के क्षेत्र मे। उसी विराट विचित्र लीला जगत् की सृष्टि है साहित्य।

–रवीन्दनाथ ठाकुर

प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।

–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

यद्यपि संगीत और काव्य का पृथक क्षेत्र है, अलग आधार है, अभिव्यक्ति का माध्यम भिन्न है और प्रभाव भी बिल्कुल अलग है, फिर भी दोनों का संयोग होने पर सोने में सुगंध जैसा प्रभाव उत्पन्न होता है। इसीलिए भारतीय संगीत में पद को संगीत–ब्रह्म (Nonmusical element) तत्त्व नहीं माना गया। हमारे यहां पद–रहित संगीत को संगीत ही नहीं कहा गया है। एसे 'निर्गीत' या 'बहिर्गीत' की श्रेणी में रखा गया है।"[25]

ऋचा एवं स्तोत्र का साहित्य सांगीतिक रूप में जनमानस पर अधिक प्रभाव डाल सकता है। लौकिक स्तोत्रों में वैदिक–उपनिषदों का ही ज्ञान भरा पड़ा है क्योंकि कहीं न कहीं लौकिक स्तोत्र रचनाकारों का वेदों की तरफ रुझान रहा।

पद्म पुराण में संगीत व साहित्य की महत्ता के संदर्भ में श्लोक उदधृत है–

"नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न च।

मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।।

मत्पुराणकथाश्रुत्वा मद्भक्तानां च गायनम्।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निन्दन्ति ये नरा मूढास्ते मद्द्वेष्या भवन्ति हि।।

अर्थात् भगवान विष्णु कहते हैं, 'हे नारद, न तो मैं वैकुण्ठ में रहता हूँ और न योगियों के हृदय में। मेरे भक्त जहाँ गान करते हैं, वहीं मैं निवास करता हूँ। जो मूढ़ मानव मेरी पुराण–कथा और मेरे भक्तों का गान सुनकर निन्दा करते हैं, वे मेरे द्वेष के पात्र होते हैं।"[26]

"संगीत व साहित्य के संबंध में कहा जा सकता है कि मूल कल्पना की दृष्टि से ओज, प्रासादिकता, सुलभता, शब्दों का सुन्दर आयोजन, भावाविष्कार आदि का ध्यान रखकर की गई रचना को श्रेष्ठ काव्य कहा जा सकता है। उसी रचना को अनुरूप राग ताल में स्वरबद्ध करने से वह गेय रचना हो जाती है।

रसाभिव्यक्ति व भावाभिव्यक्ति के लिए स्वर व शब्द दोनों को ही आवश्यक व महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए। जहाँ तक संभव हो स्वर व शब्द का ऐसा सन्तुलन बनाना चाहिए कि जिससे गीत को भी और राग को भी शुद्ध रूप से अभिव्यक्ति किया जा सके। आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक व सांगीतिक दृष्टि से संगीत और साहित्य एक ही प्रकृति के दो स्वरूप है। संगीत एवं साहित्य एक–दूसरे को ऊर्जा प्रदान करते हैं।"[27]

1) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 1
2) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा, डॉ0 विजय कुमार, पृ0 1,2
3) संगीत पत्रिका, भक्ति संगीत अंक, पृ0 28
4) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 1
5) हरिप्रभा पत्रिका, पृ0 1
6) हरिप्रभा पत्रिका, पृ0 38
7) संगीत शिक्षण के विविध आयाम, डॉ0 कुमार ऋषितोष, पृ0 48
8) भैरवी शोध संगीत पत्रिका, पृ0 83,84
9) हरिप्रभा पत्रिका, पृ0 88
10) वृहद् स्तोत्र रत्नाकर, कालिदास कृत, पृ0 155
11) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा, डॉ0 विजय कुमार, पृ0 1
12) भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ0 ठाकुर जयदेव सिंह, पृ0 189
13) संगीत शिक्षण के विविध आयाम, डॉ0 कुमार ऋषितोष, पृ0 57
14) वृहद् स्तोत्र रत्नाकर, पं0 रामतेजपाण्डेय, पृ0 210
15) कृष्ण भक्ति धारा : संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 204
16) कृष्ण भक्ति धारा–संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 205
17) कृष्ण भक्ति धारा–संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 203
18) कृष्ण भक्ति धारा : संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 205,206
19) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 9
20) संगीत मासिक पत्रिका, पृ0 27
21) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा ,डॉ0 विजयकुमार, पृ0 3
22) भारतीय संगीत में ताल और रूप विधान, डॉ0 सुभदा चौधरी, पृ0 306
23) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा, डॉ0 विजय कुमार
24) सर्वोत्तम सूक्तियों एवं संतों की वाणी, पृ0 132, 133
25) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदो का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 28
26) संगीत पत्रिका, भक्ति संगीत अंक, पृ0 14
27) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 51